ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

बांस के उत्पादक समूह से परिवारों को मिला सहारा
(पृष्ठ – 02)

माया दीदी की मुस्कान
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना जिला स्तरीय गतिविधियां
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – अगस्त 2022 ।। अंक – 13

जीविकोपार्जन क्लस्टर का निर्माण

जीविकोपार्जन क्लस्टर को सूक्ष्म उद्यमों के समूह के रूप में परिभाषित किया गया है। इसमें एक समान या समान श्रेणी के उत्पादों को बनाने वाले उद्यमों की भौगोलिक एकरूपता में सम्मिलित किया जाता है। कलस्टर में 30–50 परिवार शामिल होते हैं। क्लस्टर निर्माण की प्रक्रिया के तहत उद्यम–

क) प्रखंड के एक गांव या आस पास के कई गांवों में फैला हुआ हो।
ख) समान श्रेणी की वस्तुओं/सेवाओं का उत्पादन करता हो।
ग) समान अवसरों और चुनौतियों का सामना करता हो।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत अत्यंत निर्धन परिवारों की पहचान के दौरान ऐसे अनेक क्षेत्रों की पहचान की गई है जहाँ पारम्परिक विधि से जीविकोपार्जन व्यवसाय किए जा रहे हैं।

बांस क्लस्टर

योजना के तहत मुंगेर, मधेपुरा एवं भागलपुर जिले में कुल 87 परिवारों की पहचान की गई और उन्हें योजना से जोड़ा गया। योजना से जुड़े परिवार पारंपरिक रूप से बांस की वस्तुओं खास कर टोकरी एवं अन्य समान बनाने के कार्य में शामिल हैं। योजना से जुड़े परिवारों की मुख्य समस्या पूँजी की कमी, उत्पादन में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं की कमी, सीमित संसाधन एवं मुख्य बाजार से जुड़ाव का अभाव था। इन समस्याओं के कारण संबंधित परिवार अत्यंत गरीबी में जीवन–यापन करने को मजबूर रहे है।

कौशल विकास प्रशिक्षण

योजना में चयन उपरांत लक्षित परिवारों को आत्मविश्वास वृद्धि एवं उद्यमिता विकास विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण पाकर इनमें व्यवसाय प्रारंभ करने के साहस और आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। कौशल विकास और डिजाइन विकास प्रशिक्षण हेतु अनुभवी विषयगत विशेषज्ञों और संसाधन सेवियों का सहयोग लिया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य उनके कौशल को तराशना और सजावटी उत्पादों जैसे लैंप शेड, पानी का ट्रे, बोतल, मग, डस्टबिन, हस्तशिल्प, फर्निचर आदि के निर्माण को बढ़ाना था। ऐसे उद्यमी परिवार सफलतापूर्वक प्रक्षिशण प्राप्त कर बेहतर गुणवत्ता वाले बांस उत्पाद का निर्माण कर रहे हैं।

सामान्य सुविधा केंद्र की स्थापना

बड़े पैमाने पर उत्पादन को संस्थागत बनाने के लिए उपकरणों और मशीनरी के सेट के साथ 'सामान्य सुविधा केंद्र' की स्थापना की गयी। मशीनों के कुशल संचालन और बांस के विशेषज्ञों की मदद से गुणवत्ता वाले बांस उत्पादों के निर्माण के लिए दो बार 7–7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। निरंतर सहायता, आजीविका वित्तपोषण और क्षमता निर्माण के कारण अत्यंत गरीब परिवारों की औसतन आय मासिक रूप से प्रति व्यक्ति 5900/– रुपये से अधिक हो गई है। क्लस्टर द्वारा अब तक कुल 65,0000 का टर्नओवर किया जा चुका है।

- क्लस्टर के माध्यम से किए गए हस्तक्षेप क्लस्टर कार्यक्रम के भीतर काम करने वाले लाभार्थियों को बेहतर आजीविका और बेहतर आर्थिक लाभ प्रदान करने में सक्षम रहे हैं।
- क्लस्टर में काम करने वाले उद्यमी अपने–अपने क्षेत्रों में समान उत्पादों पर काम करने वाले अन्य लोगों की तुलना में तेजी से आगे बढ़े हैं।
- साप्ताहिक हाट के माध्यम से सीधे आदान–प्रदान की पेशकश करते हैं। उत्पादों की प्रत्यक्ष बिक्री से बिचौलियों की भूमिका समाप्त हुई है। वहीं अन्य प्रकार के खर्चों में भी कटौती हुई है।
- ग्रेजुएशन मॉडल के तहत लाइवलीहुड क्लस्टर का नवीनीकरण किया गया है, जो ना सिर्फ आजीविका के विविधिकरण को बढ़ावा दे रहा है, साथ ही साथ वृहद कला को बौद्धिक स्तर पर भी उठा रहा है। जिसके माध्यम से वह परिवार सम्मानपूर्वक अपनी और आने वाली अगली पीढ़ी के लिए नई राह बना रहा है।
- क्लस्टर सरकारी विभाग और वहां की एसजेवाई दीदियों के बीच सेतु के रूप में कार्य करने पर भी ध्यान केंद्रित कर रहा है, जिसमें बांस के प्रीमियम उत्पादों को उपहारों में विकसित किया जाता है और सरकारी विभागों के लिए विपणन किया जाता है।
- इसके माध्यम से दीदी जो अलग–अलग कौशल में निपुण थीं, एक साथ काम कर के एक दूसरे से नई एवं उन्नत कलाएं सीख रहीं हैं। इस कारण प्रत्येक दीदी विभिन्न कलाओं से अवगत हो रहीं हैं।

बांस से खुला स्वरोजगार का द्वार

मुंगेर जिले के धरहरा प्रखंड स्थित बंगलवा पंचायत में करैली गांव की महिलाएं जीविका की मदद से आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा चुकी हैं। कल तक घर में सीमित रहने वाली ये महिलाएं आज पारिवारिक–सामाजिक निर्णय और आर्थिक गतिविधियों में अपना योगदान दे रही हैं। इसी गांव की रहने वाली गौरी देवी आज एक कुशल व्यवसायी बन गई है। जीविका के माध्यम से सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ने की वजह से आज वह बेहतर जिंदगी जी रही है। गौरी के पति शराब बनाने और बेचने का काम करते थे। इसके अलावा उन्हें शराब पीने की भी बुरी लत लग गई थी। वह प्रतिदिन शराब पीते और घर आकर गौरी देवी और बच्चों के साथ मारपीट करते थे। कमाई का सारा पैसा शराब पीने में खर्च हो जाता था। इससे परिवार की स्थिति काफी दयनीय होती चली गई। गौरी देवी के लिए परिवार चलाना तक मुश्किल हो गया। इनकी दयनीय स्थिति को देखकर आंचल जीविका ग्राम संगठन द्वारा उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में किया गया। इस योजना से जुड़ाव के बाद उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में दस हजार रुपये और जीविकोपार्जन निवेश निधि के रूप में 20 हजार रुपये दिए गए। साथ ही जीविकोपार्जन अंतराल राशि के रूप में प्रति माह एक–एक हजार रुपए सात माह तक दिए गए। इसके बाद उन्हें सूप–डलिया बनाने के साथ–साथ बांस उत्पाद सामग्रियों के निर्माण हेतु प्रोत्साहित किया गया। गौरी देवी ने गांव की इच्छुक महिलाओं को संगठित करके दिनांक 17 सितंबर 2020 को विश्वकर्मा जीविका बांस उत्पाद निर्माण उत्पादक समूह का गठन किया। उन्हें इस उत्पादक समूह का अध्यक्ष मनोनित किया गया। गौरी दीदी अपने गांव की अन्य महिलाओं को शराब का व्यवसाय छोड़कर बांस के व्यवसाय को अपनाने हेतु प्रोत्साहित करने लगी। आज इनके प्रयासों का ही परिणाम है कि समाज की कई महिलाएं इस व्यवसाय से जुड़ गई। बांस सामग्री के निर्माण हेतु दीदियों को प्रशिक्षित किया गया। बांस उत्पाद सामग्री में दीदियों द्वारा कप, ट्रे, ग्लास, सुराही, गुलदस्ता, फूलदानी, टोकरी, डस्टबिन, लैंप, मोबाइल बॉक्स, चिमटा इत्यादि का निर्माण किया जाता है। गौरी कहती हैं कि सदस्यों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को नजदीकी बाजार के साथ–साथ सरकार द्वारा आयोजित सरस मेला, उद्यमी मेला आदि में भी बेचा जाता है।

बांस के उत्पादक समूह से परिवारों को मिला सहारा

बांस के उत्पादन के लिए मधेपुरा की जलवायु की स्थिति काफी अनुकूल है। जिले में अनुसूचित जाति वर्ग के डोम, तुरी, हलखोर एवं अन्य समुदाय के कई परिवार वर्षों से बांस आधारित कार्य में लगे हुए हैं। वे साल भर मुख्य रूप से बांस की टोकरी, सूप और अन्य उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करते हैं। जिला के कुमारखंड प्रखंड कोसी क्षेत्र में स्थित है इसलिए यहाँ के स्थानीय लोग बांस की आवश्यकता, मूल्य और आजीविका के अवसरों को पहचानते हैं। यही कारण है कि इस क्षेत्र के लोग बांस उत्पादन और बांस शिल्प उत्पादों में शामिल हैं। मधेपुरा के कुमारखंड में बांस पर आधारित उत्पादक समूह का गठन किया गया है। इसमें बांस के उत्पादों का निर्माण करने वाले अधिकांश परिवारों को शामिल किया गया है। इनमें से अधिकांश एससी/एसटी और अल्पसंख्यक समुदायों के सदस्य हैं और बांस उत्पादन और उससे होने वाले वस्तुओं के निर्माण में लगे हुए हैं। दयनीय आर्थिक स्थिति एवं दक्षता की कमी के कारण बाजार की अतिरिक्त मांग को ये लोग पूरा नहीं कर पाते थे। कच्चे माल की खरीद के लिए राशि की अनुपलब्धता भी इनके कार्यों में व्यवधान का प्रमुख कारण था। इन परिस्थितियों के बीच इन परिवारों को सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया और इसका यह परिणाम हुआ कि इन परिवारों के जीवन में सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर सकारात्मक बदलावा आया।

कुमारखंड में गठित वेणू शिल्प महिला जीविका उत्पादक समूह से 33 परिवार जुड़े हुए हैं, जिनमें 20 एसजेवाई लाभार्थी परिवार शामिल हैं। इन परिवारों को पशुधन और सूक्ष्म उद्यमों के स्थायी आजीविका के विकल्प दिए गए हैं। बांस आधारित इस उत्पादक समूह के सदस्यों को आवश्यकता–आधारित क्षमता निर्माण किया गया है। इससे कारीगरों को विभिन्न स्तरों पर दक्ष बनाया गया है। वर्त्तमान समय में इन परिवारों द्वारा मांग के अनुरूप बांस से नए सामान जैसे लैंप, फूलदान, स्टूल, डगरा और अन्य उपयोगी उपकरण बनाया जा रहा है। उत्पादक समूह के प्रयासों के कारण आज लक्षित परिवार जहां पूरी तरह दक्ष हो गए हैं वहीं बाजार की मांग एवं आपूर्ति के लिए पूरी तरह सक्षम बन गए है। आज उत्पादक समूह के प्रयास के कारण दर्जनों लोगों का जीवन पूरी तरह बदल गया है।

जीविका ने दिया साथ तो संवर गई जिंदगी

सहरसा जिले के कहरा प्रखंड अन्तर्गत अमरपुर गांव की रहने वाली मीटन दीदी की स्थिति काफी दयनीय थी। एक दुर्घटना में इनके पति लक्ष्मण महतो का एक हाथ कट गया। जिस कारण पति किसी भी तरह के कार्य को करने में असक्षम हो गए। इससे घर में आमदनी का स्रोत बिल्कुल बंद हो गया और घर आर्थिक कठिनाई से जूझने लगा। परिणामस्वरूप घर में भोजन पर भी आफत होने लगी। राज्य में पूर्ण शराबबंदी लागू होने के बाद बिहार सरकार द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरूआत की गई। इस योजना के क्रियान्वयन के क्रम में जनसेवा जीविका महिला ग्राम संगठन की दीदियों द्वारा ऐसे परिवारों की पहचान की जा रही थी, जो योजना हेतु उपयुक्त हों। सर्वे के दौरान ग्राम संगठन द्वारा मीटन दीदी का चयन किया गया। चयन के उपरांत दीदी को प्रशिक्षित किया गया। इसके बाद सूक्ष्म नियोजन के माध्यम से मीटन दीदी के क्षमताओं और इच्छाओं का आकलन किया गया। सूक्ष्म नियोजन के दौरान मीटन दीदी ने किराना दुकान शुरू करने की इच्छा जाहिर की। इसके बाद ग्राम संगठन के माध्यम से इस योजना के विभिन्न निधियों के तहत 30,000 रु0 उपलब्ध कराया गया। इस राशि से उन्होंने किराना दुकान शुरू किया। दुकान प्रारंभ होने के अगले सात माह तक उन्हें प्रतिमाह एक–एक हजार रुपये दिये गये ताकि वह अपने परिवार की जरूरतों को पूरा कर सके।

दीदी काफी लगन और मेहनत से दुकान अच्छी तरह संचालित कर रही है। दुकान से होने वाली आमदनी से वह न केवल परिवार का भरण–पोषण कर रही हैं बल्कि इससे दुकान की पूंजी भी बढ़ा रही हैं। इस समय दुकान के साथ–साथ दीदी अन्नपूर्णा जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ द्वारा संचालित दीदी की रसोई (राजकीय अम्बेदकर छात्रावास) में अंडे और हरी सब्जी भी उपलब्ध करा रही हैं। इससे उनकी आमदनी बढ़ गई है। आज के समय में दीदी प्रतिदिन 300 से 400 रुपये कमा रही हैं। दीदी बताती हैं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना की बदौलत उनका बिखरा जीवन फिर से संवरने लगा है। वह स्वरोजगार से जुड़कर आत्मनिर्भर बन गयी हैं और परिवार के साथ सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही हैं।

माया दीदी की मुस्कान

सीवान जिला के मैरवा प्रखंड के भिसा टोला गांव की रहने वाली माया दीदी के चेहरे पर फैली मुस्कराहट उनके जीवन में आए बदलाव एवं आत्मविश्वास को प्रतिबिंबित कर रहा है। उज्जवल जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना हेतु चयनित माया दीदी का परिवार परंपरागत रूप से ताड़ी के व्यवसाय से जुड़ा था। राज्य में देशी शराब एवं ताड़ी की बिक्री पर प्रतिबंध लगने के बाद माया देवी के परिवार की परेशानी बढ़ गई। उनके पास आजीविका का कोई साधन नहीं रहा। इससे उनके घर की आर्थिक स्थिति चरमरा गई। ऐसे में माया दीदी ने अपने आस–पास के घरों में बर्तन धोने का कार्य शुरू कर दिया। भिसा टोला जैसे ग्रामीण इलाके में इस काम से बहुत कम आमदनी होती थी। इसी बीच माया देवी का चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में किया गया। ग्राम संगठन के माध्यम से वर्ष 2019 में सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत उन्हें किराना व्यवसाय से जोड़ा गया। अपने आत्मविश्वास तथा जीविका की मदद से वह अच्छी तरह अपनी दुकान संचालित कर रही हैं। इसके अलावा उन्होंने अपने अपने पति के लिए भी रोजगार की व्यवस्था की और उनके लिए अंडे की दुकान खुलवाया है।

माया देवी को किराना दुकान और अंडे की दुकान से अच्छी आय हो रही है। दुकान से होने वाली आय से वे अपने परिवार का अच्छी तरह पालन–पोषण कर रही है। गत वर्ष दीदी ने अपनी दो बच्चियों की शादी भी की है। इसके अलावा 3 बच्चों को वह गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा दिला रही हैं। दीदी कहती है, 'कल तक जो लोग मुझे नमक तक नही देते थे वो आज मुझसे नमक खरीद कर खा रहे हैं।' अभी दीदी दुकान के साथ साथ मुर्गीपालन, बकरीपालन तथा भैंस पालन का कार्य भी कर रही हैं। इनके पास 2 बकरियां तथा एक भैंस है। वह इसे अपने भविष्य की बचत और आमदनी के रूप में देखती है। माया दीदी ने बताया कि जुलाई 2022 में उसने 46,000 रुपये में एक भैंस बेचा है। उन्होंने अपने बैंक खाते में छोटी–छोटी बचत करके 33,000 रुपये जमा कर लिए हैं। इसके अलावा उसकी कुल परिसंपति 80,939 रुपये की हो गई है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना

जिला स्तरीय गतिविधियां

सिवान जिले के दरौली बीपीआइयू अंतर्गत नारी शक्ति संकुल स्तरीय संघ, दोन में सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत चयनित लक्षित परिवारों का तीन दिवसीय गैर आवासीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। ग्रेजुएशन प्रशिक्षण का उद्देश्य दीदी को उनके व्यवसाय के शेत्र में ऐसे मुकाम तक पहुंचाना है जहां वह आत्मनिर्भर बनकर अपने व्यवसाय को बेहतर तरीके से निरंतर चला सके। सीबीडी और रिफ्रेशर प्रशिक्षण के उपरांत दीदियों को दिया गया यह प्रशिक्षण तीन दिन का होता है, ताकि दीदी व्यवसायिक साक्षरता के सभी गुणों से निपुण हो जाए। इस ग्रेजुएशन प्रशिक्षण से दीदी व्यवसाय के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बना कर समाज के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनेंगी।

दरभंगा जिला के सदर प्रखंड के वासुदेवपुर में कावेरी जीविका संकुल स्तरीय संघ के तत्वावधान में मिशन स्वावलंबन उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन संघ के तीनों प्रतिनिधि श्रीमती सोनी देवी, श्रीमती पुनिता देवी एवं श्रीमती आशा देवी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। उत्सव में सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत मिशन स्वावलंबन से जुड़े एसजेवाय के लाभार्थियों ने अपने–अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि–'पहले हमलोगों की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय थी लेकिन जबसे इस योजना से जुड़े तब से हमलोग आर्थिक रूप से सबल हुए हैं। मौके पर एसजेवाई लाभार्थियों को ग्रेजुएशन प्रमाण–पत्र और उपहार देकर सम्मानित किया गया।

जीविका के प्रखंड परियोजना क्रियान्यवयन इकाई, भगवानपुर हाट, सिवान में सतत् जीविकोपार्जन योजना के द्वारा चयनित अत्यंत गरीब परिवारों का तीन दिवसीय आवासीय ग्रेजुएशन प्रशिक्षण प्रखंड मुख्यालय स्थित कृष्णा विवाह भवन में आयोजित किया गया। जीविका के माध्यम से सतत् जीविकोपार्जन योजना का संचालन सफलता पूर्वक किया जा रहा है। प्रशिक्षण में सतत् जीविकोपार्जन योजना के द्वारा चयनित प्रखंड के 162 दीदियां शामिल हुईं, जिन्हें योजना के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराया गया था। वर्तमान में उनकी कुल परिसंपत्ति में 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और उनकी मासिक आय 4,000 हजार से अधिक हो गयी है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री अजीत रंजन, राज्य परियोजना प्रबंधक (अनुश्रवण एवं मूल्यांकन)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी –परियोजना प्रबंधक (संचार)
- श्री रतिस मोहन –परियोजना प्रबंधक (सामाजिक सुरक्षा)

संकलन टीम
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णिया
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री मनीष कुमार – प्रबंधक संचार, वैशाली